शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 8
Issue 2
15 July, 2017

जे० पी० आंदोलन का स्वरूप एवं परिणामः एक मूल्यांकन

बीज शब्द :

जयप्रकाश नारायण, जे.पी. आन्दोलन, आपातकाल, छात्र आन्दोलन, भारतीय राजनीति, भ्रष्टाचार, लोकनायक।

प्रस्तुत शोध आलेख में जे. पी. आंदोलन की प्रकृति, विस्तार एवं आंदोलन के तात्कालिक एवं दूरगामी प्रभावों का संक्षेप में गहन विवेचन विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया है। शोध पत्र में यह भी रेखांकित किया गया है कि केवल शासन व्यवस्था को बदल देने से समाज का कल्याण होने वाला नहीं है क्योंकि सत्ता का चरित्र समान ही होता है। इसीलिए जे. पी. सम्पूर्ण क्रांति के माध्यम से एक ऐसे वर्ग विहीन, शोषणमुक्त समतामूलक समाज का निर्माण करना चाहते हैं जहां गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक-आर्थिक विषमता से निजात दिलाने वाला एक मजबूत तंत्र होगा। लेकिन सत्ता लोलुपता एवं सिद्धान्त विहीन राजनीति ने जे. पी. आंदोलन को महज सत्ता परिवर्तन का एक अल्पकालिक अनुष्ठान साबित किया। शोध पत्र में इन बिन्दुओं पर भी तथ्यात्मक प्रकाश डाला गया है।

*****

सुनील कुमार यादव
शोध-छात्र राजनीति विज्ञान,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार)
E-mail : ranjeetkumar.jpu@gmail.com

जे० पी० आंदोलन का स्वरूप एवं परिणामः एक मूल्यांकन

मन से समाजवादी, विचार से क्रांतिकारी, कर्म से गाँधीवादी, लोकसत्ता के पुजारी, संपूर्ण क्रांति के महानायक एवं निष्काम कर्मयोगी लोकनायक जयप्रकाश नारायण सिर्फ व्यक्ति का नाम नहीं बल्कि एक विचार है, एक शाश्वत आंदोलन है जो लोगों के दिलो-दिमाग को झकझोरता है, एक अंतर्द्वन्द्व पैदा करता है, सोचने के लिए मजबूर करता है कि समाज कहाँ जा रहा है? वर्तमान राजनीति की दशा एवं दिशा क्या है? क्या हो रहा है और क्या होना चाहिए? जन्मजात बागी और त्यागी जय प्रकाश ने समाज को अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया, लिया कुछ नहीं। वे महात्मा गाँधी की उस अभूतपूर्व धारा के लोकनायक हैं जिन्होंने क्रांति को महज सत्तापलट नहीं माना, संपूर्णता-समग्रता के साथ उसे मानव-मुक्ति की एक आरोहन प्रक्रिया के रूप में देखा, समझा और विकसित किया। लोकनायक द्वारा आहूत संपूर्ण क्रांति की अवधारणा यह व्यक्त करती है कि केवल शासन व्यवस्था को बदल देने या एक सरकार की जगह दूसरी सरकार स्थापित कर देने से समाज का कल्याण होने वाला नहीं है। इसीलिए जयप्रकाश संपूर्ण क्रांति के माध्यम से एक ऐसे वर्गविहीन, शोषणमुक्त, समतामूलक, सुखी, समरस एवं प्रगतिशील लोकतांत्रिक समाज का निर्माण करना चाहते हैं जहाँ गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक-आर्थिक विषमता से सफलतापूर्वक मुठभेड़ करनेवाला मजबूत तंत्र होगा। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने लोककल्याण, लोकस्वराज एवं लोकनीति के समर्थन में नए तरीके से नए समाज के निर्माण के प्रयास में समस्त शक्ति लगाई। जे.पी. चाहते तो सत्ता का सुख भोग सकते थे लेकिन उन्होंने पद एवं सत्ता से दूरी बनाए रखी तथा लोकसत्ता की मजबूती हेतु लगातार काम करते रहे।

वस्तुतः स्वतंत्र भारत में जनता का सबसे ज्यादा प्यार और सम्मान जिन दो नेताओं को मिला वे थे - पंडित जवाहर लाल नेहरू और जय प्रकाश नारायण। दोनों में मौलिक अंतर यह रहा कि जहाँ नेहरू हमेशा राजसत्ता के शिखर पर रहे, जय प्रकाश हमेशा अपने को राजसत्ता से अलग रखकर लोकसत्ता को मजबूत करने में लगे रहे। दरअसल, महात्मा गाँधी के बाद ऐसा करने वालों में वे एकमात्र व्यक्ति थे। वे राजनीति और राजसत्ता के ऊपर लोकनीति और लोकसत्ता का अंकुश रखने के पक्षधर थे ताकि राजसत्ता को भ्रष्ट होने से बचाया जा सके। ऐसा व्यक्ति बार-बार नहीं आता और जब एक बार आता है तो जाता भी नहीं। कुछ लोगों ने उन्हे पलायनवादी कहा है तो कुछ की नजरों में उनके विचारों में तारतम्य नहीं है और वे कभी एक रास्ते पर नहीं चल पाये। ऐसे व्यक्तियों ने न तो उनके व्यक्तित्व को परखा न ही उनके विचारों पर गौर किया है। उन्होंने कभी कोई पद स्वीकार नहीं किया। ऐसा करने का एकमात्र कारण था कि वे सामाजिक परिवर्तन में सरकार की भूमिका को सीमित मानते थे। हालांकि महात्मा गांधी की तरह उन्होंने संसदीय संस्था को वेश्या कहकर नहीं नकारा। लेकिन उन्होंने विकेन्द्रित आर्थिक विकास और ग्राम-स्वराज की अवधारणा पर बल दिया। राष्ट्रपति राधाकृष्णन ने उनसे कहा ''जे. पी. मेक रेडी टू टेक ओवर'' उनके एक मित्र सहयोगी श्री एस. एम. जोशी ने टिप्पणी की है ''जयप्रकाश नारायण मेरे विचार में एक राजनीतिज्ञ से ज्यादा एक शिक्षक थे। वे सत्य के अन्वेषक थे। जय प्रकाश तह तक ईमानदार थे और मैं आपके जीवन से अनेक घटनाओं का उदाहरण दे सकता हूँ जिससे पता चलेगा कि सत्य और सत्यवादिता का स्थान उनकी नजर में उन सभी सामान्य चीजों से काफी ऊपर था जिन्हें आप और मैं महत्त्वपूर्ण समझते है।''

सन् 1974 में छात्र-आंदोलन की शुरूआत कोई आकस्मिक घटना नहीं थी और न ही जे. पी. का उससे जुड़ना आश्चर्यजनक था। आंदोलन की पृष्ठभूमि पर गौर करने पर पता चलेगा कि बिहार में बहुत पहले से छात्र-आंदोलन का वातावरण तैयार हो रहा था। सन् 1968 में शेख अब्दुल्ला पटना जे. पी. से मिलने उनके निवास पर गये। वहाँ शेख अब्दुल्ला ने कई लोगों की उपस्थिति में कहा ''हिन्दुस्तान की किश्ती भवर में फंसी है और जे. पी. किनारे में खड़े होकर तमाशा देख रहे है। इस किश्ती को यदि कोई बचा सकता है तो जे. पी. ही बचा सकते है। मैं तो उनसे कहूँगा कि वे या तो नाव के साथ डूब जाये या उसे किनारे ले आये''। तो जे. पी. ने जबाव दिया ''मैं किनारे खड़े होकर तमाशा नहीं देख रहा हूँ। मैं राजनीति के कुएँ में फिर से नहीं उतर सकता, लेकिन मैं जनता के समुद्र में डुबकिया लगा रहा हूँ। जब लोकतंत्र की प्रक्रिया के जन्मकाल में ही उसका गला घोटा जा रहा हो, क्या ऐसे समय में हमारा युवक वर्ग आलसी की

तरह देखता ही रहेगा। आज और इस घड़ी सक्रिय बनकर कार्रवाई करने का समय आ गया है। युवकों को स्वयं ही निश्चय करना है कि उनकी इस कार्रवाई का स्वरूप क्या हो? मेरी सिफारिश सिर्फ इतनी ही है कि लोकतंत्र की आत्मा और इसके मर्म के अनुरूप उनका व्यवहार पूरी तरह शांतिपूर्ण और निष्पक्ष होना चाहिए।'' दुनिया के कई देशों में विद्यार्थियों ने अपने देश की भाग्यरेखा को बदलने में निर्णायक रूप से हाथ बटाया है। भारत में भी यहाँ के राष्ट्रीय रंगमंच पर अपना निर्णायक पार्ट अदा करके नौजवानों की शक्ति को लोगों की सर्वोपरिता की स्थापना करनी चाहिए और पैसा, झूठ और पशुबल के बोलबाले पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिए घड़ी पक चूकी है। इसके कुछ दिनों बाद गुजरात में व्यापक पैमाने पर छात्र-आंदोलन शुरू हो गया। वहाँ के सर्वोदयी एवं कार्यकर्ताओं का एक प्रतिनिधिमंडल दिल्ली जाकर जे0 पी0 से मिला और उनसे गुजरात आने का आग्रह किया। वह तुरंत गुजरात गये। 14 फरवरी 1973 को गुजरात विश्वविद्यालय के छात्रों की सभा में उन्होंने युवकों से आह्वान किया कि वे देश की मौजूदा चुनौतियों को स्वीकार कर संघर्ष छेड़े। वे अहमदाबाद में चार दिन रहे, और कई जगह उनके भाषण हुए। इन भाषणों में उन्होंने देश की वर्तमान राजनीति, चुनाव पद्धति, आर्थिक नीति, भ्रष्टाचार एवं बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर करारी चोट की। उन भाषणों में जे. पी. हरिवंश राय बच्चन की एक पंक्ति बराबर उद्दृत करते थे, आज लहरों में निमंत्रण, तीर पर कैसे रुकूं मैं। इससे यह प्रमाणित हो जाता है कि जे. पी. नदी किनारे खड़े होकर देश की किश्ती को डूबते नहीं देख सकते थे। जैसा कि सन् 1968 में शेख अब्दुल्ला को उन्होंने जबाव दिया था। इन्हीं दिनों वे यह भी कहते थे कि देश में कोई व्यापक राजनीतिक परिवर्तन होने वाला है। इस तरह का आभास उन्हें हो रहा था इसके साथ ही स्वाधीनता प्राप्ति के बाद पहली बार देश में लोकशक्ति के दबाव में राज्य सरकार का इस्तीफा और विधान सभा का विसर्जन हो पाया। इससे यह प्रमाणित हुआ कि राज्य-शक्ति से जन शक्ति उपर है। 15 फरवरी को जे. पी. अहमदाबाद से दिल्ली लौटे और उसी दिन इन्दिरा गाँधी से भेंटकर उन्हें गुजरात की स्थिति से अवगत कराया।

7-8 जनवरी, 1974 को दिल्ली में छात्र संघों के निर्वाचित प्रतिनिधियों का अखिल भारतीय सम्मेलन हुआ। इसमें भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा में आमूल परिवर्तन एवं विश्वविद्यालय प्रशासन में लोकतांत्रिक मूल्यों के निरन्तर ह्रास के मुद्दों पर देशव्यापी आंदोलन शुरू करने की योजना बनाई गई। 22 जनवरी को पटना विश्वविद्यालय छात्र संघ का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। पत्रकार कुलदीप नय्यर ने उद्घाटन भाषण में छात्रों के राष्ट्रीय सरोकार और संघ की आवश्यकता पर अपने विचार रखे। उसी दिन शाम को पटना विश्वविद्यालय के व्हीलर सीनेट हॉल में 'लोकतंत्र के लिए युवा' विषय पर जे. पी. का भाषण हुआ। 17-18 फरवरी, 1974 को पटना में पटना विश्वविद्यालय छात्र संघ ने बिहार के सभी छात्र संघो और छात्र संगठनों का सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन लाइब्रेरी हॉल में हुआ। इससे राज्यभर के 70 महाविद्यालय के लगभग 250 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। पटना से प्रकाशित होने वाले दैनिक ''प्रदीप'' के संपादक श्री राम सिंह भारतीय ने सम्मेलन का उद्घाटन किया और इसके मुख्य अतिथि थे पटना विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डॉ. योगेन्द्र शर्मा। सम्मेलन में निश्चित हुआ कि छात्रों की ओर से 8 सूत्री मांगे सरकार के समक्ष रखी जाये और इनके लिए संघर्ष किया जाये। ये मांगे थी:

1. बिहार में सभी विश्वविद्यालय और कॉलेजों में छात्र-संघों का गठन हो और उसकी सदस्यता अनिवार्य हो।
2. शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने के लिए उसमें आमूल परिवर्तन किया जाये।
3. शिक्षित बेरोजगार युवकों को अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए राष्ट्रीयकृत बैंकों से ऋण दिये जाने का प्रावधान हो।
4. शिक्षित बेरोजगारों के लिए रोजगार की व्यवस्था या बेरोजगारी भत्ते का प्रावधान हो।
5. महंगाई पर तुरंत रोक लगे, कालाबाजारी एवं जमाखोरी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाये तथा छात्रों को कम कीमत पर राशन, पुस्तक एवं स्टेशनरी सामग्री मुहैया की जाये।
6. बिहार के सभी कॉलेजों में छात्रावास की व्यवस्था हो।
7. छात्रवृतियों की संख्या में बढ़ोतरी हो और मूल्य सूचकांक के अनुरूप उनकी राशि बढ़ायी जाय।
8. सिनेट, सिंडिकेट तथा आकदमिक कांउसिल में छात्रों का प्रतिनिधित्व हो।

18 फरवरी को गैर साम्यवादी छात्र संगठनों ने 'बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति' के गठन की घोषणा की। बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति ने फैसला किया कि इश्तहारों, पैम्पलेटों और नुक्कड़ सभाओं के माध्यम से वह लोगों को अपनी मांगों से

अवगत करायेगा। आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए बारह सदस्यी समिति गठित की गयी। इसके सदस्य थे लालू प्रसाद (अध्यक्ष, पटना वि. वि. छात्र संघ), सुशील कुमार मोदी (महासचिव, पटना वि. वि. छात्र संघ), रामजतन सिन्हा (पूर्व अध्यक्ष, पटना वि. वि. छात्र संघ), नरेन्द्र सिंह (पूर्व महासचिव, पटना वि. वि. छात्र संघ), राम बहादुर राय (विद्यार्थी परिषद्), विक्रम कुवर (भारतीय युवा मोर्चा), रधुवंश नारायण सिंह, वशिष्ट नारायण सिंह, मिथलेश कुमार सिंह (युवा संगठन कांग्रेस), उदय नारायण सिंह (आयुर्वेदिक महाविद्यालय), नितीश कुमार एवं भवेश चन्द्र प्रसाद इस समिति के संयोजक बनाये गये। बाद में कुछ और लोग इसमें शामिल हो गये। बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति ने अपनी संयुक्त अपील में जे. पी. से अनुरोध किया कि वे छात्रों की संघर्ष में मदद करें। 18 मार्च 1974 को मात्र चार-पांच सौ विद्यार्थी पटना विश्वविद्यालय से विधान सभा का घेराव करने के लिए जुलूस लेकर निकले। अपनी बारह सूत्री मांगों के समर्थन में प्रदर्शनकारी छात्रों ने विधानसभा के सामने राज्यपाल के मार्ग में धरना दे दिया। उन्हें भाषण नहीं करने दिया गया। पुलिस और छात्रों के बीच चार-पांच घंटे तक झड़प हुई। पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े, लाठी चार्ज किया और फिर गोलियाँ चलायी जिसमें कई छात्र मारे गये। 19 मार्च को विभिन्न हिस्सों में हिंसा भड़की। पांच प्रमुख शहरों में कर्फ्यू लग गया और पुलिस की गोली से दस लोगों के मरने का समाचार फैला। राज्य के सभी स्कूल-कॉलेजों को सरकारी आदेश के तहत अनिश्चित काल के लिए बंद कर दिया गया। 20 तारीख को पटना, धनबाद और मुंगेर में 'शुट एट साइट' (देखते ही गोली मारने) का आदेश जारी किया गया। पुलिस गोली से पूरे राज्य में मरने वालों की संख्या 25 हो गयी। 18 मार्च की घटना के लिए लालू प्रसाद, सुशील कुमार मोदी और रविशंकर प्रसाद को मुख्य अभियुक्त बनाया गया और 21 मार्च को इन तीनों को गिरफ्तार कर लिया गया। इस बीच छात्रों ने पूरे राज्य में हर स्तर पर 'छात्र संघर्ष समिति' का गठन कर लिया। समिति ने 23 मार्च को बिहार बंद आह्वान किया। इस बीच छात्र नेता जे. पी. से मिलकर नेतृत्व स्वीकार करने का अनुरोध करते रहते थे। उन्होंने फिर इसे टाल दिया। किंतु एक वक्तव्य जारी कर पुलिस फायरिंग की निंदा की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री अब्दुल गफूर को छात्रों से बात करनी चाहिए थी और अभी भी करनी चाहिए। असामाजिक तत्वों ने होटलों और प्रेस में आग लगा दी और निर्दोष छात्र मारे गये जो निंदनीय है। वक्तव्य में उन्होंने आगे कहा ''पहले यह जरूरी है कि सरकार अपने तंत्र को दुरूस्त करे, भ्रष्ट मंत्रियों तथा अफसरों को बरखास्त करें, प्रशासन को चुस्त बनाए तथा कालाबाजारियों, जमाखोरों, मुनाफाखोरों से सख्ती से पेश आए, भुखमरी से राहत देने की व्यवस्था करे और छात्रों की समस्या को सहानुभूति से सुने तथा विचार-विमर्श करके इनका समाधान निकाले। ''जहाँ तक मेरी बात है मैं कुशासन, भ्रष्टाचार आदि के प्रति मौन तटस्थ दृष्टा बनकर नहीं रह सकता, चाहे वह दु:स्थितियाँ पटना में हो या दिल्ली में या और कहीं। देश की ऐसी दुर्दशा के लिए कम से कम मैंने स्वतंत्रता की लड़ाई नहीं लड़ी थी। 31 मार्च को पूना में भाषण करते हुए जे0 पी0 ने कहा कि जनतंत्र इन्दिरा के हाथो खतरे में है। सोवियत अधिनायकवाद का आतंक यहाँ भी हो चला है। इसके जबाव में 1 अप्रैल को भुवनेश्वर में बोलते हुए श्रीमती गांधी ने कहा ''कांग्रेस वालों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाये जाते है। अगर विरोधी पक्ष वाले लोग ऐसे आरोप लगाते है तो मैं उन्हें समझ सकती हूँ। लेकिन आश्चर्य की बात है कि सर्वोदय वाले भी ऐसे आरोप लगाने लगे है। धनवालों के साथ स्थायी संबंध रखनेवाले और उनकी कृपा-दृष्टि चाहने वाले ऐसे लोग भ्रष्टाचार की बात करने की हिम्मत कैसे करते होंगे।'' फिर 3 अप्रैल को बिहार के सांसदों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि कुछ लोगों को एक ऊँचे नैतिक स्तर पर सलाह देते रहने की आदत होती है। हालांकि वे खुद तो बड़े उद्योगपतियों के वैभवपूर्ण अतिथि भवनों में रहते हैं। उनके यात्रा खर्च और दूसरे खर्च भी ये उद्योगपति ही दिया करते है। 3 अप्रैल को ही जे0 पी0 ने आरोपों को 'नॉनसेंस कहते हुए कहा कि इन्दिरा जी मूर्खों के स्वर्ग में रह रही है। 9 अप्रैल 1974 को पटना के गाँधी मैंदान में आमसभा में भी बोलते हुए उन्होंने अपने खर्च का हिसाब दिया कि उनके पिता के पास लगभग 105 एकड़ जमीन थी जिसका आधा हिस्सा उन्हें मिला। इसके अपने खर्च के लिए करीबन 16 एकड़ जमीन रखकर बाकी उन्होंने बाँट दी। उस जमीन से कुछ अनाज मिल जाता है। इसके अलावा मैग्सेसे पुरस्कार की राशि बैंक में पड़ी थी जिससे लगभग चार सौ रूपये प्रतिमाह व्याज के रूप में मिलते हैं। 8 अप्रैल को विशाल मौन जुलूस निकला जिसमें छात्र, शिक्षक, वकील, साहित्यकार, सर्वोदयी कार्यकर्त्ता एवं अन्य लोग शामिल हुए। सबके पीछे हाथ बँधे हुए थे। मुंह पर काली पट्टी लगी हुई थी और तख्तियों पर

लिखा था ''क्षुब्ध हृदय है बंद जुबान : हमला चाहे जैसा हो, हाथ हमारा नहीं उठेगा।'' मकान के छतों पर से लोगों ने जुलूस पर पुष्प वृष्टि की। पूर्व मुख्यमंत्री महामाया प्रसाद सिन्हा ने अब्दुल गफूर से इस्तीफे की मांग की। 9 अप्रैल को पटना के गाँधी मैदान में एक जनसभा का आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों ने जे. पी. को 'लोकनायक' की उपाधि से विभूषित किया। सभा में जे. पी. ने कहा कि यह एक शांतिपूर्ण आंदोलन की शुरूआत है और इसके आगे हमें सत्याग्रही की भूमिका में काम करना होगा। एक सरकार के जाने और दूसरी के आने भर से काम नहीं चलेगा। हमें तो समाज की बीमारियों के जड़ में जाना है। जे. पी. ने स्पष्ट घोषणा की कि 'सता की राजनीति से अलग रहूँगा। 12 अप्रैल को गया में छात्रों के प्रदर्शन पर पुलिस ने कई स्थानों पर गोलियाँ चलायी जिसमें पांच मरे और 25 घायल हुए। प्रजातंत्र को सुरक्षित रखने और सशक्त बनाने के लिए 14 अप्रैल को जे. पी. ने दिल्ली में 'जनतंत्र समाज' की स्थापना की। आचार्य कृपलानी ने भी देश की मौजूदा परिस्थिति की तुलना मुगल साम्राज्य के पतन के दिनों से की। जे. पी. की प्रोस्टेट की तकलीफ बढ़ गयी थी और उन्हें बेल्लोर जाकर उसका ऑपरेशन कराना था। 23 अप्रैल को वे पटना से वेल्लौर के लिए रवाना हुए। इसी दिन उन्होंने औपचारिक रूप से आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार किया। इस बारे में उन्होंने स्वयं कहा ''तरूणों से, छात्रों से बराबर कहता रहा हूँ जब पहले हमने अह्वान किया था 'यूथ फॉर डेमोक्रेसी' का लोकतंत्र में युवकों का क्या रोल है यह हमने जो बताया था उसमें लिखा था और उसके बाद बराबर कहता रहा हूँ, संचालन समिति में बहस करता रहा हूँ – हम बूढ़े हो गये, हमारी सलाह लीजिए। हम दूसरी पीढ़ी के हो गये। आप नई पीढ़ी के लोग हैं। देश का भविष्य आपके हाथों में है। उत्साह है आपके अन्दर, शक्ति है आपके अंदर, जवानी है आपके अंदर, आप नेता बनिये। मैं आपको सलाह दूँगा तो छात्रों ने कहा जय प्रकाश जी, मार्गदर्शन से काम नहीं चलेगा, आपको नेतृत्व स्वीकार करना पड़ेगा। मैं टालता रहा, टालता रहा। लेकिन अंत में (वेल्लोर) जाते समय उनके आग्रह को स्वीकार किया। नेतृत्व स्वीकार करने के पहले उन्होंने दो शर्तें रखी – पहला यह कि आंदोलन पूरी तरह शांतिपूर्ण होगा और दूसरा, सभी मेरे नेतृत्व को मानेंगे।

5 जून, 1974 को विधानसभा के विघटन की मांग को लेकर जे. पी. के नेतृत्व में ऐतिहासिक जुलूस निकला। सबसे आगे एक ट्रक था जिसमें लाखों हस्ताक्षर वाले आवेदन पत्र पड़े थे उसके पीछे जे. पी. की जीप थी और उसके पीछे 5–7 मी. लम्बा जुलूस जे. पी. और छात्र नेताओं ने राज्यपाल को ज्ञापन दिया। राजभवन ने लौटते समय इन्दिरा बिग्रेड के कार्यकर्त्ताओं ने जुलूस पर गोलियां चलायी जिससे कई लोग घायल हो गये। घटना के तुरंत बाद जिला प्रशासन की ओर से वहां छापा मारा गया और छह लोगों को हथियारों के साथ रंगे हाथ पकड़ा गया। शाम में गाँधी मैदान में एक महती जनसभा में जे. पी. ने सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान किया। 'यह क्रांति है मित्रों और सम्पूर्ण क्रांति है यह कोई विधान सभा के विघटन का ही आंदोलन नहीं है। वह तो एक मंजिल है जो रास्ते में है। दूर जाना है, दूर जाना है। जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में – अभी न जाने कितने मीलों इस देश की जनता को जाना है उस स्वराज्य को प्राप्त करने के लिए, जिसके लिए देश के हजारो–लाखों जवानों ने कुर्बानिया की है लेकिन आज सताईस–अठाईस वर्ष के बाद का जो स्वराज्य है, उसमें जनता कराह रही है। भूख है महंगाई है भ्रष्टाचार है कोई काम नहीं जनता का निकलता है बगैर रिश्वत दिये। सभा में मौजूद लोगों ने नारा लगाया – संपूर्ण क्रांति अब नारा है भावी इतिहास हमारा है। जे. पी. ने आगे कहा कि पुलिस ने इस जुलूस में शामिल होने के लिए बिहार के भिन्न–भिन्न हिस्सों से आ रहे लोगों और छात्रों को जहां जहां रोका है बिना कारण उन्हें पीटा है और गिरफ्तार किया है और जो लोग जनता से घबराते है वे जनता के प्रतिनिधि नहीं हो सकते। उन्होंने मांग की कि यदि इस सरकार ने विधानसभा की सम्मति से यह सब किया है तो विधानसभा का विघटना लाजिमी हो जाता है क्योंकि विधानसभा की सम्मति से सरकार चल रही है। अगर ऐसा नहीं तो 18 मार्च से इस सरकार ने जो भी काम किया है, कांग्रेस पार्टी उनकी निंदा करें और दूसरा मंत्रिमंडल की घोषणा करें। उन्होंने चुनाव पद्धति में सुधार एवं दलविहीन लोकतंत्र की स्थापना पर बल देते हुए स्पष्ट किया कि झगडा किसी व्यक्ति से नहीं, बल्कि नीतियों से है। उन्होंने जनता का आह्वान किया कि विधानसभा के सामने सत्याग्रह करें, विधायकों के निवास स्थानों का घेराव करें, जहां तक संभव हो और जनता की कोई हानि इस कार्यक्रम से न हो, वहाँ सरकार के साथ असहयोग कर, सरकार को ठप कर दें। उन्होंने कहा 'यह संघर्ष केवल सीमित उद्देश्यों के लिए नहीं हो रहा है। इसके उद्देश्य तो बहुत दूरगामी है भारतीय लोकतंत्र को 'रीयल' यानि वास्तविक तथा सुदृढ़ बनाना,

जनता का सच्चा राज कायम करना, समाज से अन्याय, शोषण आदि का अंत करना, नैतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रांति करना, नया बिहार बनाना और अंततोगत्वा नया भारत बनाना है।

7 जून से आंदोलन का नया चरण आरंभ हुआ जिसमें विधानसभा के सामने सत्याग्रह और मंत्रियों, विधायक का घेराव आदि शामिल था। 5 जुलाई को जे. पी. ने कलकत्ता में घोषणा की कि एक वर्ष के अंदर देशभर में बिहार जैसा आंदोलन फैल जायेगा। 12 जुलाई को विधानसभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी गयी। लगभग पांच हजार लोगों ने सत्याग्रह में हिस्सा लिया। जिनमें 3407 गिरफ्तार हुए। 30 विधायक ने विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। 13 जुलाई 1974 को जे0 पी0 ने आंदोलन के अन्य कार्यक्रमों की घोषणा की। इनमें हर स्तर पर संघर्ष समितियों का गठन, सभी निर्वाचन क्षेत्रों में विधायकों से त्यागपत्र की मांग के समर्थन में जुलूस तथा 1972 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी का घोषणा पत्र पढ़कर लोगों को सुनाना, जिससे लोगों को पता चल सके कि कितने वायदे पूरे नहीं किये गये आदि शामिल थे। 1 अगस्त को दिनभर उपवास रखा गया। शाम में गाँधी मैदान में जे0 पी0 का भाषण हुआ, जिसमें मूसलाधार बारिस के बावजूद काफी बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। जे0 पी0 ने सबों से प्रतिज्ञा कर्रवाई कि हम अपने जीवन में किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार को सहन नहीं करेंगे और उसे समाप्त करने के लिए पूरा प्रयत्न करेंगे। 9 अगस्त 'संपूर्ण क्रांति' के रूप में मनाया गया। उस दिन शराब दुकानों, शराब भट्ठियों तथा सरकारी दफ्तरों के समक्ष धरना दिया गया। 15 अगस्त 'लोक स्वराज्य दिवस' के रूप में मनाया गया, जिसमें छात्रों एवं युवकों ने सरकारी समारोह का बहिष्कार किया और अपने झड़े फहराये। कई जगहों पर पुलिस ने आंसू गैस छोड़ी और भीड़ पर लाठिया चलायी। 16 अगस्त को बिहार के तत्कालीन लोकायुक्त एस. बी. सोहनी ने राज्य के दो मंत्रियों को कारण बताओं नोटिस जारी किया। दारोगा प्रसाद राय के विरूद्ध 6 करोड़ के पम्पिंग सेट की खरीद में गोलमाल का आरोप लगा। 2 अक्टूबर 1974 को गांधी जयंती पर 'संकल्प दिवस' मनाया गया। जे0 पी0 ने कहा कि महात्मा गांधी ने पूर्ण स्वाधीनता की कल्पना की थी आधी स्वाधीनता ब्रिटिश हुकूमत के समाप्त होने से आयी है और बाकी आधी स्वाधीनता तब आयेगी जब देश से गरीबी, शोषण और निरंकुशता को खत्म कर समतामूलक समाज का निर्माण किया जायेगा। 14 अक्टूबर को जे. पी. ने वक्तब्य जारी कर बिहार में गांव, पंचायत और प्रखण्ड स्तरो पर समान्तर जनता सरकार के गठन के लिए चार सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की।

1. यदि विधानसभा का विघटन न हो तो जनता की विधानसभा बुलाई जाय।
2. 4 नवम्बर को सचिवालय का घेराव।
3. पूरे राज्य में सरकारी गतिविधियों को ठप करने का अभियान
4. कर नहीं देने का अभियान।

25 दिसम्बर 1974 को विनोबा ने एक वर्ष के लिए मौन धारण कर लिया। मौन की अवस्था में भी विनोबा ने जे. पी. के समक्ष अपने विचार रखे जो कि रणछोड़ होगा उसकी जीत होगी। कृष्ण के रण छोड़कर भागने से अंततः युद्ध टल गया। ज्यादा तनाव न हो, इसलिए जय प्रकाश जी भी यदि रण छोड़ देते है तो उनकी जीत होगी। जे. पी. ने इसका जबाव दिया कि रण छोड़ने का अर्थ होगा गद्दारी। उन्होंने विनोबा को समझाया कि उनका संघर्ष सिर्फ सत्ता के विरूद्ध नहीं, बल्कि व्यापक अर्थ में समाज परिवर्तन के लिए है। 1 जनवरी 1975 को उन्होंने एक निर्दलीय एवं स्वतंत्र युवा संगठन की घोषणा की – छात्र युवा संघर्ष वाहिनी। 2 जनवरी 1975 को मोहन धारिया को जे. पी. के प्रति सहानुभूति रखने के लिए केन्द्रिय मंत्रिमंडल से बर्खास्त कर दिया गया। इसी बीच 12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इन्दिरा गांधी के खिलाफ राजनारायण द्वारा दायर की गयी अर्जी पर फैसला सुनाया जिसमें चुनाव संबंधी भ्रष्टाचार के लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी को जिम्मेवार मानते हुए उनके चुनाव को रद्द कर दिया गया। सर्वोच्च न्यायालय में अपील के लिए उन्हें 20 दिन का समय दिया गया, हांलांकि इस बीच वे लोकसभा की सदस्य नहीं रह गयी थी। जे. पी. ने सलाह दी कि सर्वोच्च न्यायालय के फैसले तक उन्हें प्रधानमंत्री के पद से हट जाना चाहिए। इससे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विरोधी दलों ने प्रधानमंत्री से त्यागपत्र की मांग करने के लिए राष्ट्रपति भवन के सामने प्रदर्शन करने की योजना बनायी। जे. पी. ने कह दिया था कि उसमें भाग नहीं लूँगा। लेकिन मित्रों के आग्रह और दबाव में आकर उस कार्यक्रम में शामिल होने 25 जून को वे दिल्ली पहुँचे। 25 जून को रामलीला मैदान में आम सभा का आयोजन किया गया जिसमें जे. पी. को ही मुख्य वक्ता बनाया गया। वह एक ऐतिहासिक

सभा थी जिसमें कई लाख लोग सम्मिलित हुए। उसी रात पूरे देश में आंतरिक आपातकाल घोषित कर दिया गया तथा अगले दिन जे. पी. सहित तमाम बड़े नेता को गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में ही जे. पी. की किड़नी खराब हो गई और उन्हें डायलिसिस पर रहना पड़ता था। आपातकाल में मीडिया की स्वतंत्रता छीन ली गई, न्यायपालिका की आजादी पर भी प्रहार किया गया। इंदिरा गांधी के छोटे पुत्र संजय गांधी आपातकाल के दौरान सुपर प्रधानमंत्री के रूप में कुख्यात हो गए थे। उस समय एक नारा बहुत मशहूर हुआ था – इमरजेंसी के तीन दलाल – संजय, शुक्ला, बंसीलाल। आपातकाल के दौरान ही 42वाँ संविधान संशोधन कर लोकसभा के कार्यकाल को छः साल कर दिया गया। लोकसभा का चुनाव 1976 में होना था लेकिन संविधान संशोधन के बाद अचानक जनवरी 1977 में इन्दिरा गाँधी ने आम चुनाव की घोषणा कर दी। जे. पी. ने सभी विरोधी दलों को एक साथ मिलकर चुनाव लड़ने को कहा। इससे जनता पार्टी का जन्म हुआ। बीमारी की हालत में भी जहाँ तक सम्भव हो सका उन्होंने चुनाव सभाओं को सम्बोधित किया। जहाँ नहीं जा सके वहां उनका टेप लोगों को सुनाया गया। चुनाव में जनता पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ। असम से लेकर गुजरात तक कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली। राजस्थान में सिर्फ एक स्थान पर काग्रेस की जीत हुई। स्वयं श्रीमती इन्दिरा गाँधी रायबरेली से राजनारायण के हाथो चुनाव हार गई। संजय गांधी भी अमेठी से हार गये। जे. पी. ने सबसे पहले जनता पार्टी के सांसदों को दिल्ली में बापू की समाधि राजघाट पर शपथ दिलायी। पार्टी को बहुमत प्राप्त होते ही प्रधानमंत्री पद के लिए भाग-दौड़ शुरू हो गयी। चूंकि कई पार्टियों को मिलाकर जनता पार्टी का गठन किया गया था इसलिए गुटबाजी भी उभरकर सामने आयी। राजनारायण ने सच्चिदानंद को फोन कर जे. पी. के नाम संदेश दिया कि उन्होंने एक क्रांति तो पूरी कर दी है और अब चौधरी चरण सिंह को प्रधानमंत्री बनाकर वे दूसरी क्रांति भी पूरी कर दें। जब सच्चिदा बाबू ने राजनारायण का संदेश जे. पी. को दिया तो वे बिगड़ गये और बोले कि मैं किसी को प्रधानमंत्री नहीं बनाऊगा। जे. पी. ने स्पष्ट कहा कि यह तय सांसदों को करना है कि प्रधानमंत्री कौन होगा? 13 अप्रैल 1977 को आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से उनका राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित हुआ। उनका संदेश बंबई के जसलोक अस्पताल में टेप किया गया था इस संदेश में उन्होंने सबसे पहले उन प्रतिनिधियों को वापस बुलाने के अधिकार पर बल दिया। इसके साथ ही उन्होने राजनीतिक तथा सरकारी क्षेत्रों से भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए कारगर कदम उठाने, प्रशासनिक और चुनाव संबंधी सुधार करने, निरक्षरता समाप्त करने, बुनियादी शिक्षा दिये जाने और ऊँच-नीच पर आधारित जाति प्रथा को समाप्त कर समानता एवं भाईचारे के आधार पर नया समाज बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने शुरू में ही स्पष्ट कर दिया कि सता-परिवर्तन मात्र से कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं होगा, और सम्पूर्ण क्रांति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए काम जारी रखना होगा। लेकिन चुनाव खर्च कम करने, भ्रष्टाचार समाप्त करने और जन प्रतिनिधियों को वापस बुलाने के मामलों में कोई कार्रवाई नहीं की गई। 5 जून 1978 को जे. पी. ने सार्वजनिक रूप से वक्तब्य दिया ''जनता सरकार भी पिछली कांग्रेस सरकार के ही रास्ते पर चल रही है लोग उम्मीद खो रहे है क्योंकि जनता पार्टी उनकी अपेक्षा पर खरी नहीं उतर रही है। वे बराबर कहते थे कि यदि उनका स्वास्थ साथ देता तो वे संपूर्ण क्रांति के लिए देशव्यापी यात्राएं बंद न करते।

जीवन के अंतिम दिनों में लोकनायक जनता सरकार की कार्यप्रणाली से पूरी तरह निराश हो चुके थे। उन्हें यह एहसास हो चुका था कि क्रांति विफल हो चुकी है। गाँधी की तरह जे. पी. को भी जीवन के अंतिम दिनों में सियासत के स्वार्थी चरित्र से पूरी तरह मोहभंग हो गया था।

फिर भी व्यापक फलक एवं परिप्रेक्ष्य में देखने पर स्पष्ट लगता है कि 1974-75 का बिहार आंदोलन आजाद भारत के इतिहास की एक युगांतकारी घटना है। मूलतः यह छात्रों के आदर्शवादी और अहिंसक आंदोलन से जनमत बनाकर शासन के भ्रष्टाचार को दूर करने, राजनीति के स्थान पर लोकनीति को तरजीह देने, राजसत्ता के उपर लोकसत्ता को स्थापित करने का तहरीक था। बिहार आंदोलन जे. पी. के अपने जीवन का भी एक निर्णायक पड़ाव है। इसने उन्हें अपने सामाजिक राजनीतिक विचारों को जमीन पर उतारने का अवसर दिया। देश में जरूरी सामाजिक बदलाव लाने की प्रबल इच्छा से उन्होंने अपने लंबे राजनीतिक जीवन में कई क्रांतिकारी विचारों को अपनाया था, पर इसके साथ ही उन्होंने कभी उच्च नैतिक सिद्धांतों को नहीं छोड़ा, भौतिक लाभ की जगह परोपकार और उदारता की श्रेष्ठता को कबूल किया तथा राजसत्ता की जगह लोकशक्ति को ही बदलाव का बेहतर उपकरण माना। उनका अंतिम लक्ष्य था संपूर्ण क्रांति अर्थात् जीवन

के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और नैतिक क्षेत्रों में बदलाव। उनका मानना था कि क्रांति सतत और हर क्षेत्र में साथ-साथ चलने वाली प्रक्रिया है और अन्य क्षेत्रों में बदलाव लाए बगैर कोई एक बदलाव नहीं हो सकता। वे मानते थे कि इसी के चलते सिर्फ राजनीतिक एवं आर्थिक बदलाव पर जोर देने वाली विचारधाराएँ असफल हुई हैं।

राजनीतिक दलों और राजनीतिक प्रक्रिया पर पूरा भरोसा न करने वाले जे. पी. ने धीरे-धीरे शैक्षिक व्यवस्था, बेरोजगारी की स्थिति, भ्रष्टाचार, महंगाई और सामाजिक कुरीतियों को लेकर बेचैन नौजवानों पर भरोसा किया और उनकी उर्जा को समाज में बदलाव की दिशा में मोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने 72 साल की उम्र में छात्रों-नौजवानों से सीधा संवाद बनाया, निरंकुश राजसत्ता के विरूद्ध एक व्यापक जनआंदोलन चलाया तथा लोकतांत्रिक तरीके से उसे पराजित कर भारत में लोकतंत्र को चिरंजीवी बना दिया। उन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी साम्राज्यवाद, फासीवाद, गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, असमानता, भ्रष्टाचार, जातिवाद एवं सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध संघर्ष करने में होम कर दी

स्पष्ट है कि जे. पी. का सारा चिन्तन और कर्म जनता एवं जनहित से संबंधित है तथा उनकी समाजवाद से संपूर्ण क्रांति तक की यात्रा का अभीष्ट भी यहीं है। जीवन भर वे सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन के लिए संघर्ष करते रहे और उसमें एक हद तक कामयाब भी रहे। ये बात और है कि उनके शिष्यों ने जो संपूर्ण क्रांति की ही सियासी पैदाइश थे, सबसे पहले संपूर्ण क्रांति की भावना एवं उनके अरमानों का गला घोंटा लेकिन इससे जे. पी. की महत्ता, महानता और प्रासंगिकता कम नहीं होती। आज भी लोग गाँधी-लोहिया-अम्बेदकर की तरह जे. पी. का नाम लेकर सियासत का सोपान चढ़ रहे हैं।

संदर्भ :

1. दि इंडियन नेशन, पटना, 13 अक्टूबर, 1968
2. जय प्रकाश, संपादन-नारायण देसाई कांतिशाह, जय प्रकाश अमृत कोश, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली, पृ. 410.
3. जय प्रकाश आंदोलन की पृष्ठभूमि, सिन्हा, अमर नाथ, ज्योत्स्ना प्रकाशन, पटना, पृ. 85.
4. द्विवेदी, आर. एन. : ग्लिम्पसेज ऑफ दि जे. पी. मूवमेंट, विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी, 1989, पृ. 57.
5. सिन्हा, अमरनाथ, वही, पृ. 87
6. जय प्रकाश, वही, पृ. 455.
7. नारायण, जय प्रकाश : संपूर्ण क्रांति के लिए आह्वान, पृ. 9
8. वही, पृ. 06.
9. वही, पृ. 41.
10. द्विवेदी, आर. एन., वही, पृ. 64.
11. जय प्रकाश, वही, पृ. 459.
12. वही, पृ. 460.
13. जय प्रकाश नारायण, अ लीडर ब्रिट्रेड, इंडिया टुडे, 1-15 अप्रैल, 1979, पृ. 09.

◆◆◆

शोधसारांश का ई-प्रकाशन

E-Publication of Research Abstracts

अपने पी.एच.डी./डी.लिट. अथवा स्वतंत्र शोध कार्य की संक्षिप्तिका का ई-प्रकाशन कर अपने कार्य को वैश्विक शोध संदर्भों से जोड़े। निम्न प्रारूप में **शोधसार** (अधिकतम 5000 शब्दों में) बनाकर संपादकीय कार्यालय में प्रेषित करें। शोधसारांश के प्रकाशन हेतु सम्पादक के नाम पत्र होना चाहिए, जिसमें स्पष्ट रूप से शोध-पत्र के सम्बन्ध में ''मौलिक एवं अप्रकाशित'' शब्द लिखा होना चाहिए। प्रत्येक पृष्ठ पर हस्ताक्षर करें।

1. शोध शीर्षक Title
2. शोधकर्ता Name of Researcher
3. शोधपर्यवेक्षक Name of Research Supervisor
4. संबद्ध विभाग (पी.एच.डी./डी.लिट. के लिए) Concerning Department
5. विश्वविद्यालय/शोधसंस्थान University/Research Institute
6. शोधसारांश Abstract
7. अनुक्रम Index
8. पता Mailing Address and Contact No.(if you wish to Publish)